मीपण बंध हे मिथ्या वाहे। ६९ इप बस्तुचि आहे आहे। त्वंपद

हाम ह विक (राग: जोगिया - ताल: केहरवा) हा इक्त विहास

कमलवदनीं हें अमृत भरा। माणिक माणिक मंत्र स्मरा।।धु.।। द्वैतबुद्धि ही दूर करा। अहंब्रह्म हे नच विसरा।।१।। सकलमताचा पंथ धरा। सर्व सौख्य येईल घरा।।२॥ महावाक्य हे मनीं विवरा। ज्ञानरूप मार्तण्ड स्मरा।।३॥